प्रचलित परीक्षा पद्धति के दोष (निबन्धात्मक प्रणाली)

(Defects in Existing Pattern of Examination)

वर्तमान परीक्षा पद्धति का स्वरूप निबन्धात्मक (Essay type) है। इन परीक्षाओं में विद्यार्थी तथा शिक्षक दोनों का एक मात्र उद्देश्य परीक्षा पास करना होता है जिससे उनकी प्रतिभा का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। यही कारण है कि इन परीक्षाओं की घोर निन्दा होने लगी है। सन् 1902 के विश्वविद्यालय ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है—

The conclusion is irresistible that education in India dominated by external control and tutelage in the form of fragmentary and unscientific examinations has resulted mostly in the prepetuation of mediocrity and retardation of genius-facts which are necessary concomitants, if not, inevitable consequences of the pervailing system.

परीक्षायें हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को जर्जर तथा निष्क्रिय बनाने में सहायक हुई हैं। कुछ आलोचक तो यहाँ तक कहते हैं कि ये परीक्षायें एक अविश्वास के दर्शन (Philosophy of doubt) पर अवलम्बित हैं अतः इनका त्याग करना ही उचित है। श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने सन् 1937 में मद्रास के बीसवें प्रान्तीय शिक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुआ कहा था—

People are anxious to know my views, there is no difficulty in my saying that examinations are no good at all. A test is a fundamental attack on truth,

Scanned with CamScanner

it is a sign of distrust. You are truthful enough to hand over numerous boys to a teacher and a head master. Every body will agree that the certificate of the headmaster and the staff who have personal touch with the boy is more reliable than the result of an examination. You are bound to trust them. If so trust them for other things, you must trust them for this also.

एक अन्य स्थान पर भारतीय विश्वविद्यालय आयोग (1902) ने प्रचलित परीक्षा प्रणाली की तीव्र आलोचना करते हुए कहा है कि विश्वविद्यालय शिक्षा को परीक्षाओं से कम महत्त्व दिया जाता है और परीक्षाओं को शिक्षा से कहीं अधिक महत्त्व दिया जाता है।

(".....the greatest evil from which the system of University education suffers in India is the that teaching is subordinated to examination and not examination to teaching.")

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (The University Education Commission1948–49) ने कहा है कि "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परीक्षा प्रणाली ही सबसे दूषित तथ्य है।"

"..... The whole system of education is examination ridden. The frequency of examinations and the manner of conducting them exercise an adverse effect upon the aims and methods of education. They suffer from a failure to define with any degree of exactness of the purpose."

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने भी प्रचलित परीक्षा प्रणाली की तीव्र आलोचना की। आयोग ने परीक्षा प्रणाली को पुस्तकीय, यांत्रिक, परम्परागत एकक तथा संकुचित बताया।

".....bookish and mechanical, stereotyped and rigidly uniform and did not cater to the different aptitudes of the pupils."

डा० बी०एस० ब्लूम ने वर्तमान परीक्षा प्रणाली पर बड़े तीखे प्रहार किये है। उनके अनुसार मुख्य दोष निम्न हैं—

1. कक्षा में जो कुछ भी कार्य किया जाता है वह विषय के उद्देश्य को ध्यान में रखकर नहीं किया जाता है।

2. बहुत से अनावश्यक तथ्य केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये ही रट लिये जाते हैं।

3. प्रश्न पत्रों में मौलिकता (Originality) का पूर्ण अभाव रहता है।

4. उत्तर पुस्तिकाओं का अंकन करने में शिक्षक की आत्मनिष्ठता (Subjectivity) का प्रभाव पड़ता है।

5. वाह्य परीक्षायें छात्र उपलब्धि का असन्तोषप्रद एवं अपर्याप्त मापक हैं।

6. विभिन्न विषयों के परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकालने की परम्परा अत्यन्त दूषित है। इससे असफल छात्रों का प्रतिशत बहुत ऊँचा हो जाता है।

7. पाठ्यक्रम दूषित है। इसमें केवल विषय के कुछ शीर्षकों का उल्लेख मात्र होता है। साथ ही, निर्दिष्ट उद्देश्यों का भी अभाव रहता है। फलतः परीक्षा उद्देश्य आधारित (objective based) नहीं हो पाती।

8. प्रश्न पत्रों में कुछ महत्त्वपूर्ण तथा प्रिय (Favourite) प्रश्नों को अनावश्यक रूप में दोहराया जाता है। इससे छात्र हर वर्ष अपना अध्ययन इन्हीं प्रश्नों तक केन्द्रित रखते हैं।

Scanned with CamScanner

" Favourite questions are repeated, slight changes are made in the wordings of questions in successive years, there are great similarities in the questions used in different states, most of the questions appeared to be a sort that might be thought about on the last day or a short time before the examination material was due. Rarely, did I encounter questions which suggested that the paper-setter had given careful thought to the matter over an extended period of times. In short, the questions were routine and stereotyped, as though, every one was quite weary with the system and was merely going through the formalities required by it." — **Dr. B. S. Bloom, 'Evaluation in Secondary Schools'.**

उपरोक्त दोषों के अतिरिक्त भी कुछ दोष हैं, जो निम्न प्रकार हैं—

1. विज्ञान एक ऐसा विषय है जिसमें हम छात्रों की व्यक्तित्व सम्बन्धी उपलब्धियों का मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षाओं के माध्यम से नहीं कर सकते।

2. प्रश्न-पत्रों में कठिनाई स्तर (Difficulty Index) का कोई प्रभाव नहीं होता।

3. परीक्षायें अवसर तत्त्व (Chane factor) से पूर्ण रूपेण प्रभावित रहती हैं।

4. प्राय: ऐसा अनुभव किया जाता है कि जो छात्र तीव्र गति एवं सुन्दर लेख में उत्तर देते हैं, उन्हें अच्छे अंक प्राप्त होते हैं।

5. प्रश्न-पत्रों में प्रश्नों की संख्या सीमित होती है जिससे परीक्षा की व्यापकता (Comprehensiveness) का गुण समाप्त हो जाता है। साथी ही, किया गया मूल्यांकन वैध (Valid) तथा विश्वसनीय (Reliable) नहीं होता।

6. वैकल्पिक प्रश्नों (Optional questions) की सुविधा के कारण छात्र को सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को तैयार न करने की छूट मिल जाती है। विज्ञान जैसे विषय में इस प्रवृत्ति को न अपनाया जाये।

7. प्राय: विज्ञान के प्रश्न-पत्रों में सिद्धान्तों, प्रत्ययों, सम्बन्धों, संकल्पनाओं आदि पर प्रश्न नहीं पूछे जाते, जो कि अनुचित है। इसके लिये अवबोधन (understanding) तथा अनुप्रयोग (application) के अच्छे प्रश्नों का समावेश करना चाहिये।

8. विज्ञान की उपलब्धियों का मूल्यांकन वर्ष में गिनी-चुनी परीक्षाओं से सम्भव नहीं है।

9. विज्ञान की परीक्षाओं में औपचारिकता का पुट नहीं होना चाहिये। विज्ञान अध्यापक ही इन परीक्षाओं के लिये प्रश्न-पत्रों का निर्माण करे।

10. मूल्यांकन की वर्तमान विधि बालक के पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कार्यों एवं सफलताओं की पूर्ण रूप से उपेक्षा करती है।

Scanned with CamScanner